INDIAN GEOGRAPHY ①

→ भारत का पुराना नाम जम्बूदीप है। यूनानियों ने इसे इण्डिया कहा तथा ईरानियों ने हिन्दुस्तान कहा। भारत हिन्द महासागर के शीर्ष पर उत्तर पूर्वी गोलार्ध में स्थित है। इसका अक्षांशीय विस्तार 8°4' - 37°6' है। तथा देशान्तरीय विस्तार 68°7' - 97°25' है।

Note : भारत का देशांतरीय और अक्षांशीय विस्तार लगभग समान है। यह विस्तार लगभग 30° का है। 30° का देशान्तरीय विस्तार होने के कारण भारत के पूर्व और पश्चिम के शहर में (समय) लगभग 2 घण्टे का अन्तर है। अर्थात यदि अरुणांचल प्रदेश में सूर्योदय 8 बजे होता है तो सौराष्ट्र में सूर्योदय 10 बजे होगा।

→ भारत का उत्तरतम बिन्दु इन्दिरा काल है। जबकि दक्षिणतम बिन्दु इन्दिरा प्वाइन्ट है। इसे Pigmalian Point या Parson Point भी कहा जाता है।

→ भारत का पूर्वी छोर वालांगू (अरुणांचल प्रदेश) एवं पश्चिमी छोर सरक्रीक या राजहिर (गुजरात) में है।

→ भारत का क्षेत्रफल विश्व के क्षेत्रफल का 2.43% है। जबकि जनसंख्या 16.7% है।

→ भारत का क्षेत्रफल 3287263 वर्ग किमी० है। क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत से 6 बड़े देश हैं। जो हैं —

रूस > कनाडा > चीन > USA > ब्राजील > आस्ट्रेलिया > भारत।

→ भारत का सबसे बड़ा राज्य राजस्थान है। एवं सबसे छोटा राज्य गोवा है।

→ केन्द्रशासित प्रदेशों में सबसे बड़ा राज्य अण्डमान निकोबार जबकि सबसे छोटा राज्य लक्षद्वीप है।

KD Job Updates

→ $23\frac{1}{2}°$ उत्तरी कर्क रेखा भारत के बीचो-बीच 8 राज्यों से होकर गुजरती है। — गुजरात, राजस्थान, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखण्ड, प० बंगाल, त्रिपुरा मिजोरम

→ 24° की अक्षांश रेखा को सरक्रीक रेखा भी कहा जाता है। यह कच्छ के रन में स्थित है।

→ सरक्रीक भारत और पाक के बीच विवादित है।

→ भारत की स्थलीय सीमा 15,200 Km. यह सीमा 7 देशों से लगी हुई है। — पाकिस्तान, अफगानिस्तान, चीन, नेपाल, भूटान, बंग्लादेश, म्यांमार।

→ भारत बांग्लादेश के साथ सबसे बड़ी सीमा (4096 बनाता है। इस सीमा पर मेघालय, त्रिपुरा, असम, मिजोरम व पश्चिम बंगाल जैसे 5 राज्य हैं।

→ भारत और अफगानिस्तान के बीच की सीमा रेखा को डूरण्ड रेखा कहते हैं। यह सीमा सिक्किम से अरुणांचल तक जाती है।

→ भारत और भूटान की सीमा रेखा पर सिक्किम, प० बंगाल, असम तथा अरुणांचल प्रदेश स्थित है।

→ भारत और चीन के बीच नेपाल एक बफर राज्य है। इसलिए यह चीन और भारत दोनों के लिए सामरिक रूप से महत्वपूर्ण है।

→ भारत के तटीय भाग की ल० 7516.5 किमी० जबकि मुख्य रूप से तटीय भाग की ल० 6० किमी० है।

→ सबसे लम्बी तटीय रेखा गुजरात की (1214.7 किमी०) है। दूसरे नं० पर आन्ध्र प्रदेश की सीमा है।

भारत के 9 राज्य तटरेखा से लगे हैं।

तटीय सीमा

- प्रादेशिक सीमा (12 नॉटिकल मील)
- अन्य आर्थिक सीमा (200 नॉटिकल मील)

KD Job Updates

→ इस सीमा में समुद्री संसाधनों का दोहन किया जा सकता है। भारत का अनन्य आर्थिक क्षेत्र (Exclusive Economic Zone) श्रीलंका तक विस्तृत है। इसलिए भारत के नक्शे में श्रीलंका को दिखाया जाता है। (1 नॉटिकल मील = 1.8 मी)

→ पांडिचेरी एक मात्र ऐसा राज्य है जो 4 स्थानों पर स्थित है।—

तमिलनाडु में – पांडिचेरी और कराइकल
केरल में – माहे
आन्ध्र प्रदेश में – यनम

→ उत्तर प्रदेश की सीमा सर्वाधिक 9 प्रान्तों (दिल्ली सहित) को छूती है।

→ असम की सीमा 7 प्रान्तों को छूती है।

→ भारत और श्रीलंका के मध्य पंबन द्वीप स्थित है। इसी को रामेश्वरम् या आदम का पुल कहा जाता है।

→ यदि प० बंगाल घाट से कोई जलयान पूर्वी घाट तक जाता है। तो उसे श्रीलंका घूम कर जाना पड़ता है। अतः दण्डराफ टेलर ने 1860 में सेतुसमुद्रम योजना की संकल्पना दी। भारत सरकार ने नब्बे के दशक से ही इस योजना को साकार रूप देने की कोशिश की। इस योजना के तथाकथित रामसेतु या पंबन द्वीप को काटकर नहर खोदा जाना प्रस्तावित है। लेकिन धार्मिक और पर्यावरणीय आग्रह के चलते यह योजना साकार रूप नहीं ले पाई है। इन विरोधों के चलते ही कई वैकल्पिक मार्ग भी सुझाये गये। जैसे - धनुषकोटि से मार्ग बनाना। अभी हाल ही में गठित पचौरी समिति ने धनुषकोटि से होकर गुजरने वाले मार्ग को सबसे बेहतर विकल्प माना है।

KD Job Updates

इसमें 30 मी॰ चौड़े, 12 मी॰ गहरे और 167 कि॰मि॰ ल
नहर इसी धनुषकोटि से होकर बनाई जाएगी।
इस नहर के माध्यम से मन्नार की खाड़ी और
बंगाल की खाड़ी को जोड़ दिया जाएगा।

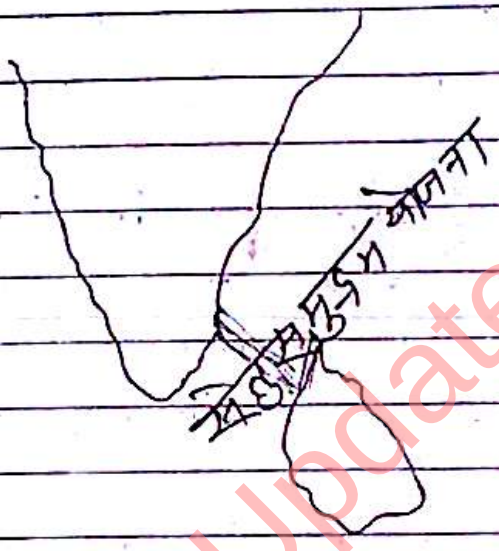

→ भारत और श्रीलंका के मध्य एलिफैंण्टा
दर्रा भी है। लेकिन यह स्मरण रहे कि एलिफैण्टा
द्वीप मुम्बई के पास है। यहीं पर प्रसिद्ध एलिफैण्टा
की गुफा है।

→ अरुणांचल प्रदेश को नेफा (NEFA - North East Frontier
Agency) भी कहते हैं।

(पेप्सू) (PEPSU) Patiyala East Punjab State Union
8 राज्यों का संघ था। जिसे 1956 में पंजाब
में मिला दिया गया।

KD Job Updates

—: भारत का भौतिक भूगोल :—

—: भारत का भौतिक विभाजन :—

संरचनात्मक दृष्टिकोण से
(i) प्रायद्वीपीय भारत (पुरानी)
(ii) हिमालयी भारत
(iii) गंगा - यमुना का मैदान (नवीन)

उच्चावच्च दृष्टिकोण से
(i) उत्तर का पर्वतीय भाग
(ii) उत्तर का मैदान
(iii) दक्षिण का पठार
(iv) तटीय मैदान व द्वीप

संरचनात्मक दृष्टिकोण से —

1. प्रायद्वीपीय भारत :—

यह भारत की सबसे पुरानी संरचना है। इसका निर्माण प्रीकैम्ब्रियन युग में उस समय हुआ जब पृथ्वी तरल से ठोस में रूपांतरित हो रही थी। अत: कहा जा सकता है कि प्रायद्वीपीय भारत लावा निर्मित है।

→ प्रायद्वीपीय भारत में धारवाड़ एवं गोंडवाना दोनों तरह की चट्टानें पाई जाती हैं। धारवाड़ चट्टानें धात्विक खनिजों से भरी हैं जबकि गोंडवाना चट्टानें कोयले से भरी हैं।

2. हिमालयी भारत :—

हम जानते हैं कि मिसोजोइक युग में अंगारा लैण्ड एवं गोंडवाना लैण्ड के बीच टैथिस सागर हुआ करता था। इसी सागर में प्रायद्वीपीय भारत की नदियाँ गिरती थीं जो अपने मलवों का निक्षेप करती थीं।

→ सिनोजोइक युग में अंगारा लैण्ड और गोंडवाना लैण्ड एक दूसरे के करीब आये। अत: टैथिस सागर की तली पर दबाव पड़ा जिससे तली मुड़कर ऊपर

KD Job Updates

उठने लगी। इस तरह एक मोड़दार या वलित पर्वत का निर्माण हुआ जिसे हिमालय कहा गया। यह हिमालय एक अवसादी पर्वत है।

3. गंगा यमुना का मैदान :—

हिमालय पर्वत बनने के बाद अफगानिस्तान से लेकर असम तक एक गहरी खाई बन गई अब दक्षिण भारत की नदियाँ टेथिस सागर में न गिरकर खाई में ही गिरने लगी। इधर हिमालय से कुछ नदियाँ निकलीं जो खाई में ही गिरने लगीं। नदियों के मलवों से खाई पट गई और यहां गंगा यमुना का उपजाऊ मैदान हो गया। अतः हम कह सकते हैं कि भारत की सबसे प्राचीन संरचना प्रायद्वीपीय भारत तथा नवीन हिमालय है।

उच्चावच्च के आधार पर भारत का विभाजन :—

1. उत्तर का पहाड़ी भाग :—

पाकिस्तान के बलूचिस्तान से लेकर म्यांमार के अराकानयोमा तक लगभग 2400 कि॰ के प्रसार में उत्तर की पहाड़ियाँ फैली हैं। इन पहाड़ियों को 3 भागों में विभाजित किया जा सकता है। —

i) ट्रांस हिमालय :—

यह हिमालय के उत्तर में है। ट्रांस हिमालय में ही काराकोरम दर्रा है। यहीं पर पीओके में भारत की सबसे ऊँची चोटी K-2 गाडविन है (POK)। ट्रांस हिमालय में ही कैलाश पर्वत है, तथा मानसरोवर झील भी है। इस झील से ब्रह्मपुत्र सिन्धु तथा सतलज नामक नदियां निकलती हैं। ट्रांस हिमालय के उत्तर में पामीर का पठार है। इसे विश्व की छत या प्यारी भूमि कहा जाता है।

KD Job Updates

→ ट्रांस हिमालय में ही नुब्रा और सिगार जैसी घाटियाँ हैं। इन घाटियों में बड़े - बड़े ग्लेशियर भी हैं। जैसे नुब्रा घाटी में सियाचीन ग्लेशियर है। यह ग्लेशियर भारत और पाक के बीच विवादित है।

2. हिमालय :—

हिमालय पूर्व से पश्चिम की ओर गई 3 पर्वतमालाओं के संयुक्त रूप को कहते हैं। जो निम्नलिखित हैं —

(i) बृहद् हिमालय :—

इसे महान हिमालय या आन्तरिक हिमालय भी कहा जाता है। इसकी औसत ऊँचाई 6000 मीटर है। यहाँ हिमरेखा 5000 मी० की ऊँचाई पर पाई जाती है। इस हिमालय पर विश्व की ऊँची - ऊँची चोटियाँ हैं। —

जैसे - एवरेस्ट —

यह विश्व की सबसे ऊँची चोटी है। जो नेपाल में स्थित है। नेपाल में इसे सागरमाथा कहा जाता है।

कंचनजंघा —

K-2 गाडविन के बाद यह भारत की सबसे ऊँची है, जो सिक्किम में स्थित है।

मकालू - नेपाल ✓
नंगा पर्वत - भारत ✓
धौलागिरि - नेपाल ✓
अन्नपूर्णा - नेपाल ✓
नामन्चाबरुआ - तिब्बत ✓

→ गंगोत्री एवं यमुनोत्री हिमालय में स्थित ग्लेशियर हैं।

(ii) लघु हिमालय :—

इसे मध्य हिमालय भी कहा जाता है। इसमें नन्दा देवी, केदारनाथ, त्रिशूल इत्यादि

KD Job Updates

चोटियाँ हैं। इन चोटियों में उत्तरांचल में स्थित नन्दा देवी सर्वाधिक ऊँची चोटी है।

→ वृहद् हिमालय और लघु हिमालय के बीच कश्मीर और काठमांडू जैसी घाटियाँ हैं। यहाँ मसूरी, नैनीताल कुल्लू मनाली, चकराता जैसे पर्यटक स्थल भी हैं। यहाँ पर कोणधारी वन पाये जाते हैं। इन वनों में चीड़ देवदार इत्यादि के वृक्ष मिलते हैं।

→ सबसे अधिक ऊँचाई पर पाया जाने वाला वृक्ष चीड़ है। यहाँ पर घास के मैदान भी पाये जाते हैं। घास के इन मैदानों को कश्मीर में मर्ग एवं उत्तरांचल में बुगयाल कहा जाता है।

iii) बाह्य हिमालय :—

इसे शिवालिक हिमालय भी कहते हैं। शिवालिक हिमालय के गिरिपाद में गंगा यमुना का मैदान है। लघु हिमालय और शिवालिक हिमालय के बीच कई घाटियाँ पाई जाती हैं। इन घाटियों को पश्चिम में दून एवं पूरब में द्वार कहा जाता है।

पूर्वी पहाड़ियाँ :—

असम के पास में हिमालय की एक शाखा पूरब की ओर गई है। तथा एक शाखा पश्चिम की ओर गई है। पूरब की ओर जाने वाली शाखा पर पटकोई बुम्म, नागा, लुसाई, मिजो और अराकानयोमा जैसी पहाड़ियाँ हैं।

→ अराकानयोमा भारत और म्यांमार की सीमा बनाती है। जो शाखा पश्चिम की ओर गई है उस पर गारो, खासी, जयन्तिया जैसी पहाड़ियाँ हैं। इन्हीं पहाड़ियों में भारतीय मानसून फँस जाने के कारण मासिनराम और चेरापूंजी में विश्व की सर्वाधिक वर्षा होती है।

KD Job Updates

—: हिमालय का प्रादेशिक विभाजन :—

सिन्धु	पंजाब हिमालय	सतलज	कुमाऊँ हिमालय	काली	नेपाल हिमालय
तिस्ता	असम हिमालय	दिहांग			

पश्चिम ⟶ ⟶ पूरब

2. उत्तर का मैदान :—

सामान्य विभाजन (उत्तरी मैदान जलोढ़ निर्मित)

पश्चिम (i) भाभर जलोढ़
↓ (ii) तराई जलोढ़
(iii) बांगर जलोढ़
(iv) खादर जलोढ़
पूरब (v) डेल्टा जलोढ़

प्रादेशिक विभाजन :

(i) सिन्धु का मैदान
(ii) पंजाब - हरियाणा का मैदान
(iii) गंगा - यमुना का मैदान
(iv) ब्रह्मपुत्र का मैदान

—: सामान्य विभाजन :—

—: प्रादेशिक विभाजन :—

(i) सिन्धु का मैदान :—

इस मैदान का पूर्वी भाग डेल्टाई है सिन्धु नदी का डेल्टा विश्व का सबसे लम्बा डेल्टा है। लेकिन बहुत पतला होने के कारण इसकी चर्चा नहीं की जाती है। इस मैदान का पश्चिमी भाग बांगर है।

KD Job Updates

(ii) पंजाब - हरियाणा का मैदान :—

यह मैदान दोआबों का बना है। दो नदियों के बीच के उपजाऊ मैदान को दोआब कहते हैं। इन दोआबों में सिन्धु, झेलम और चिनाब के बीच के दोआब को सिन्धुसागर कहते हैं।

→ रावी और चिनाव के बीच के दोआब को रचना कहते हैं।

→ रावी और व्यास के बीच के दोआब को बारी कहते हैं।

→ व्यास और सतलज के बीच के दोआब को बिस्त कहा जाता है।

→ इसी तरह 5 नदियों के दोआबों से निर्मित क्षेत्र को पंजाब कहा जाता है।

सिन्धु झेलम चिनाव [रचना] रावी [बारी] व्यास [बिस्त] सतलज

[सिन्धुसागर]

उत्तर → → दक्षिण

(iii) गंगा - यमुना का मैदान :—

यह मैदान सर्वाधिक उपजाऊ मैदान है। यह जलोढ़ मिट्टी द्वारा निर्मित है। पश्चिम बंगाल के पास बना सुन्दरवन का डेल्टा (गंगा - ब्रह्मपुत्र) सबसे बड़ा व उपजाऊ माना जाता है। यद्यपि यह सिन्धु से कम लम्बा है पर इसकी चौड़ाई बहुत ज्यादा है।

(iv) ब्रह्मपुत्र का मैदान :—

यह मैदान पश्चिम बंगाल एवं असम में विस्तृत है। यह ब्रह्मपुत्र एवं उसकी सहायक नदियों से निर्मित है।

KD Job Updates

3. दक्षिण का पठार या प्रायद्वीपीय भारत

मालवा का पठार (ग्रेनाइट निर्मित)
(i) बुन्देलखण्ड का पठार
(ii) बघेलखण्ड का पठार
(iii) नागपुर का पठार

दक्कन ट्रैप (बेसाल्ट निर्मित)
(i) पश्चिम घाट की पहाड़ियाँ
(ii) पूर्वी घाट की पहाड़ियाँ
(iii) अन्य पहाड़ियाँ

(1) मालवा का पठार :—

यह पठार लावा निर्मित है। यह कठोर ग्रेनाइट चट्टानों से बना है। इसके अन्तर्गत बुन्देलखण्ड का पठार आता है, जो ललितपुर जिले में (झाँसी) स्थित है। यहाँ की मिट्टी कंकरीली - पथरीली माभर मिट्टी है।

→ बघेलखण्ड का पठार मध्य प्रदेश में है। यहाँ प्रसिद्ध हीरे की खान पन्ना है।

→ छोटा नागपुर का पठार झारखण्ड और बिहार में विस्तृत है। इस पठार में धारवाड़ और गोंडवाना दोनों प्रकार की चट्टानें पाई जाती हैं। धारवाड़ चट्टानों में धात्विक खनिज एवं गोंडवाना चट्टानों में कोयला भरा हुआ है। इसलिए इस पठार को खनिजों का कटोरा कहा जाता है। इसी पठार पर दामोदर नदी बहती है। जिसे कोयले की नदी कहा जाता है।

→ विश्व में कोयले की नदी जर्मनी में वासगेज और काला पर्वत के बीच राइन नदी है।

→ मालवा के पठार पर ही चम्बल, केन, बेतवा जैसी नदियाँ बहती हैं। ये यमुना की सहायक नदियाँ हैं। ये नदियाँ अपने प्रवाह के क्षेत्र में मिट्टी के बड़े - बड़े टीलों का निर्माण करती हैं। मिट्टी के टीलों के लिए मुख्य रूप से चम्बल नदी जानी जाती है। इन टीलों के कारण ही चम्बल घाटी में बड़े - बड़े बीहड़ों का निर्माण हो गया है।

KD Job Updates

इसलिए चम्बल घाटी को लुटेरों की घाटी भी कहा जाता है।

→ इन मिट्टी के टीलों के कारण ही भारत में सबसे अधिक अपरदन मालवा के पठार पर होता है।

→ अपरदन के लिए विशेष रूप से चम्बल घाटी जानी जाती है।

2. दक्कन का पठार (दक्कन ट्रैप) :—

दक्कन ट्रैप भी लावा निर्मित है। यह बेसाल्ट चट्टानों का बना हुआ है। इसका आधार सतपुड़ा है। जबकि मुजारें पूर्वी घाट एवं पश्चिमी घाट की पहाड़ियाँ हैं। इस तरह यह एक त्रिभुजाकार रचना है। इस पठार को कृष्णा, गोदावरी, कावेरी इत्यादि नदियों ने जगह-जगह पर काट दिया है। इससे यह अनेक छोटे-छोटे पठारों में विभाजित हो गया है।—

जैसे— महाराष्ट्र एवं आन्ध्रा के पठार

दक्कन के पठार में कई छोटी-छोटी पहाड़ियाँ भी हैं।—

(i) सतपुड़ा की पहाड़ियाँ :—

सतपुड़ा एक भ्रंश पर्वत है। यह नर्मदा और ताप्ती नदियों के बीच एक बाँध की तरह स्थित है। इसकी सबसे ऊँची चोटी धूपगढ़ है। यहीं पर अमरकंटक भी है।

(ii) मैकाल की पहाड़ियाँ :—

यह सतपुड़ा की भाग है। भारत की यह एकमात्र पहाड़ी है। जो अपकेन्द्री अपवाह तन्त्र का नमूना पेश करती है। क्योंकि → यहाँ के अमरकंटक से पश्चिम की ओर बहने वाली नर्मदा नदी निकलती है।

KD Job Updates

→ पूरब की ओर बहने वाली सोन नदी निकलती है।
→ यहाँ की सिहावा पहाड़ियों से दक्षिण पूरब की ओर बहने वाली महानदी निकलती है।

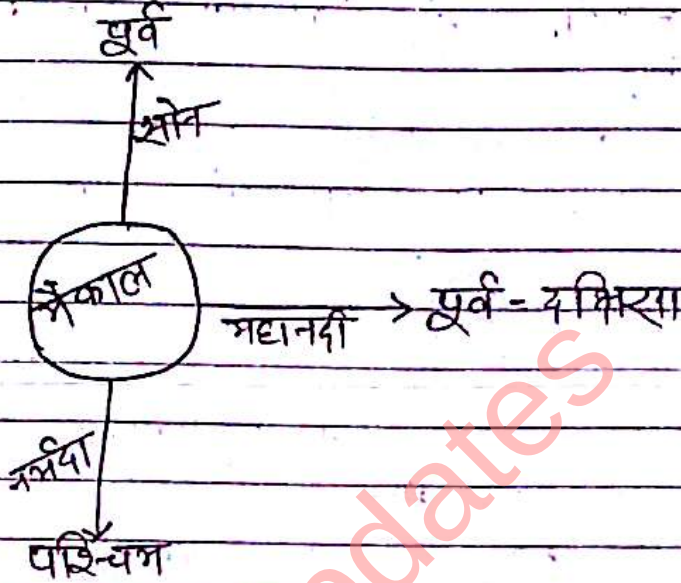

1. पश्चिमी घाट की पहाड़ियाँ :—

ये पहाड़ियाँ ताप्ती से लेकर कन्याकुमारी तक लगभग 1500 किमी० की लम्बाई में फैली हैं। इन्हें सह्याद्रि भी कहा जाता है। पश्चिमी घाट की इन पहाड़ियों में उत्तर से दक्षिण के क्रम में निम्न पहाड़ियाँ शामिल की जाती हैं।—

(i) नीलगिरि — उत्तर ↓
(ii) पलनी
(iii) अन्नामलाई
(iv) कार्डमम या इलायची
(v) महेन्द्रगिरि ↓ दक्षिण

→ नीलगिरि की पहाड़ी ऐसी पहाड़ी है जो पश्चिमी घाट को पूर्वी घाट से मिलाती है। इस पहाड़ी की सबसे ऊँची चोटी (दोदाबेटा) डोडाबेटा (2637 मी.) है। यहीं पर प्रसिद्ध पर्यटक स्थल ऊटकमण्डल या ऊटी है। इसी पहाड़ी पर दक्षिण भारत की सबसे बड़ी जनजाति टोडा रहती है।

KD Job Updates

→ पलनी की पहाड़ियों पर प्रसिद्ध पर्यटक स्थल कोडाईकैनाल है।

→ अन्नामलाई की पहाड़ियाँ जिसमें सबसे ऊँचा शिखर अन्नामुडी(2695 मी॰) है। जो दक्षिण भारत की सबसे ऊँची चोटी है।

→ कार्डमम की पहाड़ियाँ इलायची उत्पादन के लिए मशहूर हैं। इन पहाड़ियों के दक्षिण में महेन्द्रगिरि (1654 मी॰) है।

पश्चिमी घाट के दर्रे :—

उत्तर से दक्षिण के क्रम में पश्चिमी घाट में निम्नलिखित दर्रे हैं। —

(i) थालघाट :— (581 मी॰)

इस दर्रे से मुम्बई से कोलकाता तक का रेलमार्ग जाता है।

(ii) भोरघाट :— (229 मी॰)

इस दर्रे से मुम्बई से चेन्नई तक का रेलमार्ग जाता है।

(iii) पालघाट :— (300 मी॰)

इस दर्रे से कोचीन से चेन्नई तक का रेलमार्ग जाता है।

कूट :— थाली भर पुलाव

इस तरह उपरोक्त दर्रों से होकर ही कोंकण रेलवे गुजरती है। इन दर्रों के अलावा सिनकोना गैप भी एक प्रमुख दर्रा है।

2. पूर्वी घाट की पहाड़ियाँ :—

ये पहाड़ियाँ पश्चिमी घाट की पहाड़ियों की अपेक्षा अधिक कटी-फटी हैं। क्योंकि कृष्णा, गोदावरी इत्यादि नदियों ने इन्हें जगह जगह पर काट दिया है। इनमें जवादि, सेवराय, नल्लामलाई इत्यादि प्रमुख हैं। पूर्वी घाट की सबसे

ऊँची चोटी विशाखापट्टनम है। तथा दूसरी चोटी महेन्द्रगिरि है, जो उड़ीसा में है।

3. अन्य पहाड़ियाँ :—

(i) अरावली की पहाड़ियाँ :—

ये पहाड़ियाँ तो राजस्थान में हैं लेकिन प्रायद्वीपीय का ही भाग हैं। यह सबसे पुराना वलित पर्वत है। घिस - पिट जाने के कारण ही इसे अवशिष्ट पर्वत कहा जाता है। इसका विस्तार दिल्ली से अहमदाबाद तक है। इसका सबसे ऊँचा शिखर गुरुशिखर है। यहीं पर प्रसिद्ध पर्यटन स्थल माउण्ट आबू तथा जैन मन्दिर दिलवाड़ा है।

→ अरावली के पश्चिम में थार का मरुस्थल है। इसमें पवन द्वारा निर्मित बर्खान जैसी स्थलाकृतियाँ बहुतायत मात्रा में मिलती हैं।

→ दिल्ली की रायसीना हिल अरावली का ही भाग है। जिस पर राष्ट्रपति भवन बना है। राष्ट्रपति भवन के वास्तुकार लुटियन्स थे।

(ii) विन्ध्याचल की पहाड़ियाँ :—

इसमें कैमूर, भारनेर, पारसनाथ इत्यादि पहाड़ियाँ शामिल हैं। यह प्रायद्वीपीय भारत की सबसे लम्बी पहाड़ी है। विन्ध्याचल को भारत का जल विभाजक भी कहा जाता है। क्योंकि इन्हीं पहाड़ियों की वजह से दक्षिण भारत की नदियाँ उत्तर में नहीं आ पाती हैं। इसके दक्षिण में सतपुड़ा की पहाड़ि हैं। ये दोनों पहाड़ियाँ मिलकर भ्रंश घाटी का निर्माण करती हैं। जिसमें नर्मदा नदी बहती है। विन्ध्याचल एक वलित पर्वत है जबकि सतपुड़ा एक भ्रंश पर्वत है।

KD Job Updates

(iii) तेलंगाना का पठार :—

इसे रैलर पठार भी कहा जाता है। क्योंकि यह छत्तीसगढ़ के पठार की तरह है। तेलंगाना और छत्तीसगढ़ को संयुक्त रूप से चावल का कटोरा कहा जाता है। भारत में सर्वाधिक प्रति हेक्टेयर चावल का उत्पादन छत्तीसगढ़ में तथा दूसरे नं० पर तेलंगाना है।

(iv) दण्डकारण्य का पठार :—

इसका अधिकांश भाग छत्तीसगढ़ में है। यह एक शुष्क पठार है।

(v) विदर्भ और सौराष्ट्र :—

यहाँ वर्षा बहुत कम होती है। जिससे सूखा पड़ जाता है। यह बहुत पिछड़ा क्षेत्र है। विदर्भ महाराष्ट्र में है। एवं सौराष्ट्र गुजरात में है।

(vi) हरिश्चन्द्र की पहाड़ियाँ :—

ये पहाड़ियाँ महाराष्ट्र में हैं इन्हीं पहाड़ियों पर महाबलेश्वर स्थित है।

KD Job Updates

तटीय मैदान

- पश्चिमी तटीय मैदान
  - केरल तट (मुम्बई → गोवा)
  - कनारा तट (मुम्बई → मंगलौर)
  - मालाबार तट (मंगलौर → तिरुवनन्तपुरम)
- पूर्वी तटीय मैदान
  - उत्तरी सरकार (महानदी - कृष्णा)
  - कोरोमण्डल (कृष्णा - कावेरी)

→ पश्चिमी तटीय मैदान पूर्वी मैदान की अपेक्षा अधिक कटा - पिटा तथा गहरा है।

इसलिए पूर्वी तट की अपेक्षा यहाँ पर अधिक बन्दरगाह हैं। पूर्वी तटीय मैदान चिकना है। यह नदी डेल्टाओं के द्वारा पाट दिया गया है। इसलिए यह प्राकृतिक बन्दरगाह के विकास के लिए अनुकूल नहीं हैं। पश्चिमी तट पर गिरने वाली नर्मदा व ताप्ती नदियाँ एस्चेवरी बनाती हैं। तथा पूर्वी तट पर गिरने वाली नदियाँ डेल्टा बनाती हैं। पूर्वी और पश्चिमी तट पर अनेक लैगून या अनूप झीलें बन गई हैं। —

जैसे— उड़ीसा की चिल्का झील, आन्ध्र प्रदेश की कोलेरू झील, श्रीहरिकोटा के पास स्थित पुलीकट झील (यह झील तमिलनाडु व आन्ध्र प्रदेश की सीमा पर है।), केरल की वेम्बानाद झील।

द्वीप समूह

- अण्डमान निकोबार (बंगाल की खाड़ी) — 204 द्वीप (लावा निर्मित)
- लक्षद्वीप (अरब सागर) — 43 द्वीप (प्रवाल)

1. अण्डमान निकोबार द्वीप समूह :—

10° का चैनल अण्डमान को निकोबार से अलग करता है। जबकि डेक्कन पार दक्षिणी अण्डमान को छोटे अण्डमान से अलग करता है। भारत का दक्षिणतम बिन्दु ग्रेट निकोबार में स्थित है। यह 6°30' अक्षांश पर स्थित है। अण्डमान निकोबार में कई सक्रिय ज्वालामुखी हैं। जैसे बैरन द्वीप तथा नारकुण्डम ज्वालामुखी।

2. लक्षद्वीप :—

इस द्वीप समूह में अमीनी द्वीप, अलियावेट

KD Job Updates

दतियावेट तथा मिनीकाय द्वीप शामिल हैं। इसका सबसे बड़ा द्वीप मिनीकाय है। 8° की रेखा लक्षद्वीप को मालद्वीप से अलग करती है। मुम्बई के पश्चिम में बाम्बे हाइवे है, यह भारत का सबसे बड़ा तेल उत्पादक क्षेत्र है।

→ सबसे अधिक तेल उत्पादन गुजरात के अंकलेश्वर में होता है।

→ चेन्नई के पास हेयर द्वीप है, यहाँ बड़ी संख्या में खरगोश पाये जाते हैं।

—: हिमालय के दर्रे :—

1. काराकोरम दर्रा :—
इससे कश्मीर से लेह तक का मार्ग जाता है। यह विश्व का सबसे ऊँचा मार्ग है।

2. जोजीला दर्रा :—
इससे श्रीनगर से लेह तक का मार्ग जाता है।

3. बुर्जिल दर्रा :—
इससे कश्मीर से मध्य एशिया को मार्ग जाता है।

4. शिपकिला दर्रा :—
यह हिमांचल प्रदेश में स्थित है। इससे शिमला से तिब्बत तक का मार्ग जाता है।

5. लिपुलेख दर्रा :—
यह उत्तरांचल में है। इससे मानसरोवर से कैलाश तक का मार्ग जाता है।

KD Job Updates

6. नाथुला दर्रा :—

भारत और चीन के बीच व्यापार को बढ़ावा देने के लिए जुलाई 2006 में इस दर्रे को खोल दिया गया। यह सिक्किम में है।

7. सतलज गार्ज :—

भारत से तिब्बत का मार्ग इसी गार्ज से होकर जाता है।

जलवायु :—

भारतीय मानसून :—

भारतीय जलवायु उष्ण कटिबन्धीय मानसूनी जलवायु है। हिमालय पर्वत और हिन्द महासागर इस जलवायु को विशिष्टता प्रदान करते हैं। हिमालय पर्वत मध्य एशिया से आने वाली ठण्डी हवाओं से भारत की रक्षा करता है। जबकि हिन्द महासागर दक्षिण भारत के लोगों के लिए गिजर का काम करता है।

मानसून की उत्पत्ति

- परम्परागत अवधारणा (I.T.C.Z.)
- आधुनिक अवधारणा (जेट स्ट्रीम)

1. I.T.C.Z. अवधारणा :—

मई - जून में सूर्य कर्क रेखा पर चमकता है। अर्थात् उत्तरायण की स्थिति में होता है। अतः इन दिनों उत्तर भारत में खूब गर्मी पड़ती है। इसलिए यहाँ निम्न वा

KD Job Updates

दाब का क्षेत्र हो जाता है। इन्हीं दिनों हिन्द महासागर में अपेक्षाकृत कम गर्मी पड़ती है, इसलिए यहाँ पर उच्च वायुदाब का क्षेत्र बन जाता है। अत: जलवाष्प से भरी मानसूनी हवाएँ हिन्द महासागर से भारत की ओर चलने लगती हैं। इनकी दिशा दक्षिण - पश्चिम से उत्तर - पूर्व होती है। अत: इसे दक्षिण पश्चिम मानसून कहा जाता है।

→ दक्षिण - पश्चिम मानसून 1 जून को मालाबार तट पर पहुँचता है। यहाँ पर यह पश्चिमी घाट की ऊँची पहाड़ियों से टकराता है। अत: मालाबार तट पर खूब वर्षा करता है। वर्षा-पवन अभिमुख ढाल पर होती है। पश्चिमी घाट का पूर्वी ढाल वर्षा से वंचित रह जाता है। इसलिए इसे वृष्टि छाया प्रदेश कहा जाता है।

→ मालाबार तट पर पहुँचकर यह मानसून कई शाखाओं में बँट जाता है। इसकी एक शाखा पश्चिमी घाट की पहाड़ियों से होती हुई अरावली पहुँचती है। चूँकि अरावली इस मानसूनी हवा के समानान्तर पड़ता है। इसलिए यह मानसूनी हवा अरावली से नहीं टकराती है। अत: यहाँ वर्षा नहीं होती है। अरावली के समानान्तर चलती हुई यह मानसूनी शाखा शिवालिक हिमालय से टकराती है। जिसे पूर्वी पंजाब, उ० प्र०, बिहार इत्यादि प्रदेश में वर्षा होती है। अब यह शाखा शिवालिक के सहारे गारो, खासी, जयन्तिया पहुँच जाती है।

द० पश्चिम मानसून की दूसरी शाखा पूर्वी घाट की पहाड़ियों के समानान्तर चलती हुई अराकान को पहुँचती है। चूँकि पूर्वी घाट इसके समानान्तर पड़ता है। इसलिए यहाँ कम वर्षा होती है।

KD Job Updates

लेकिन यह मानसूनी शाखा अराकानयोमा से टकराती है, अतः यहाँ खूब वर्षा होती है।

→ अराकानयोमा के सहारे चलती हुई यह गारो, खासी, जयन्तिया पहुँचती है। जहाँ यह खूब बारिश करती है। यहाँ स्थित मासिनराम और चेरापूँजी में विश्व की सर्वाधिक वर्षा होती है।

→ दक्षिण - पश्चिम मानसून 1 June को भारत में चढ़ता है, तथा 15 July तक पूरे देश में छा जाता है। 15 Sep तक घूम - घूम कर पूरे देश में बारिश करता है। एवं 15 Sep के बाद लौटना शुरू हो जाता है।

→ मानसून के लौटने का कारण सूर्य का दक्षिणायन चले जाना है। 15 Sep तक सूर्य विषुवत रेखा के आस - पास होता है। इसलिए हिन्द महासागर में अपेक्षाकृत अधिक गर्मी पड़ने लगती है। अतः हिन्द महासागर में निम्न वायुदाब का क्षेत्र तथा उत्तर भारत में उच्च वायुदाब का क्षेत्र बन जाता है। जिससे हवा उत्तर से दक्षिण भारत की ओर चलने लगती है। जिसकी दिशा उत्तर पूर्व से दक्षिण पश्चिम की ओर होती है। इसलिए उत्तरी पूर्वी मानसून या उतरता हुआ मानसून कहा जाता है। यह उतरता हुआ मानसून भारत की ओर से चलने के कारण शुष्क है। जैसे ही यह मानसून बंगाल की खाड़ी में पहुँचता है, यह बहुत अधिक जलवाष्प उठा लेता है। जिससे यह चक्कर खाने लगती है। इस चक्कर खाती हवा को ही उष्ण कटिबन्धीय चक्रवात कहा जाता है। यह चक्रवात अक्टूबर एवं नवम्बर में आन्ध्र प्रदेश में भारी तबाही मचाता है।

KD Job Updates

तबाही मचाने के बाद यह सामान्य होकर आगे बढ़ता है। इस क्रम में यह बंगाल की खाड़ी से पुनः जलवाष्प उठा लेता है। जलवाष्प भरी यह हवा Nov - Dec में कोरोमण्डल तट पर पहुँचती है और तमिलनाडु में खूब बारिश करती है। इस तरह यदि मालाबार तट पर चढ़ते हुए मानसून से बारिश होती है तो कोरोमण्डल तट पर ठण्डी में उतरते हुए मानसून से बारिश होती है।

I.T.C.Z. (Inter Tropical Convergence Zone) अन्त: उष्ण कटिबन्धीय अभिसरण क्षेत्र :—

विषुवतीय निम्न वायु दाब पेटी एक ताप पेटी है। अत: ताप के अनुरूप इसकी अभिसरण होती रहती है। जब सूर्य कर्क रेखा पर चमकता है तो यह कर्क रेखा पर शिफ्ट हो जाती है। तथा जब मकर रेखा पर चमकता है तो मकर रेखा पर शिफ्ट हो जाती है। इसकी ऐसी shifting को ही ITCZ कहते हैं।

गर्मी में यह उत्तर तथा ठण्डी में दक्षिण में होती है। निम्न वायुदाब का यह क्षेत्र हिन्द महासागर से आने वाली हवाओं को अपनी ओर आकर्षित करता है। जब ये हवाएँ विषुवत रेखा को पार करके उत्तरी गोलार्द्ध में आती हैं तो फेरल के नियम से यह दिशा बदल जाती है। इसलिए उत्तरी गोलार्द्ध में पहुँचने के बाद इन हवाओं की दिशा दक्षिण पश्चिम से उत्तर पूर्व हो जाती है। अब इन हवाओं को दक्षिण पश्चिम मानसून कहा जाता है।

KD Job Updates

मानसून उत्पत्ति की जेट स्ट्रीम अवधारणा :—

क्षोभमण्डल में काफी ऊँचाई पर 20° से 30° उत्तरी अक्षांशों के मध्य पश्चिम से पूर्व की ओर चलने वाली तेज हवाओं को जेट स्ट्रीम कहा जाता है। ये हवाएँ ईरान, अफगानिस्तान होती हुई हिमालय के उत्तर में चलती हैं।

→ गर्मी के दिनों में निम्न वायु दाब का क्षेत्र बन जाता है। अतः ये हवाएँ हिमालय से थोड़ा और उत्तर खिसक जाती हैं। इसके उत्तर खिसकने के वजह से एक गैप बन जाता है। इस गैप को भरने के लिए हिन्द महासागर से जलवाष्प भरी हवाएँ भारत की ओर चलने लगती हैं, इन्हीं हवाओं को मानसून कहा जाता है। जिससे भारत में वर्षा होती है।

— ऋतुएँ :—

शीत	ग्रीष्म	वर्षा	शरद
(i) पछुआ विक्षोभ से प० पंजाब एवं कश्मीर में वर्षा	(i) मैंगो शावर	(i) द० प० मानसून से वर्षा	(i) उड़ीसा तट पर उष्ण कटिबन्धीय वर्षा।
(ii) तमिलनाडु में उ० पू० से वर्षा	(ii) टी शावर		

शीत ऋतु :—

यह ऋतु 15 Dec से 15 Mar तक होती है। इस ऋतु से पछुआ विक्षोभ से थोड़ी बहुत वर्षा हो जाती है। ठण्डी के दिनों में भूमध्यसागर से ईरान, अफगानिस्तान होकर आने वाली हवाओं को पछुआ विक्षोभ कहा जाता है। इस पछुआ विक्षोभ

KD Job Updates

से पश्चिम पंजाब, कश्मीर और हिमाचल प्रदेश में थोड़ी बहुत वर्षा हो जाती है।

ग्रीष्म ऋतु :—

यह ऋतु 15 Mar से 15 June के बीच होती है। इस ऋतु में मानसून आने से पहले कुछ स्थानों पर थोड़ी बहुत वर्षा हो जाती है। जो फुहार के रूप में होती है। यह फुहार पश्चिमी घाट की भी पहाड़ियों पर आम की फसल के लिए बहुत लाभकारी होती है। इसलिए इसे आम्र वर्षा कहते हैं।

यह असम में चाय की खेती के लिए भी लाभकारी होती है। इसलिए यहाँ इसे चाय वर्षा, काल वैशाखी तथा नार्वेस्टर भी कहा जाता है।

वर्षा ऋतु :—

यह ऋतु 15 Jun से 15 Sep के मध्य होती है। इस ऋतु में दक्षिण मानसून से जबरदस्त बारिश होती है।

शरद ऋतु :—

यह ऋतु 15 Sep से 15 Dec के मध्य होती है। इस ऋतु में उत्तर पूर्व मानसून से उड़ीसा और आन्ध्र तट पर चक्रवात आते हैं।

—: मिट्टी :—

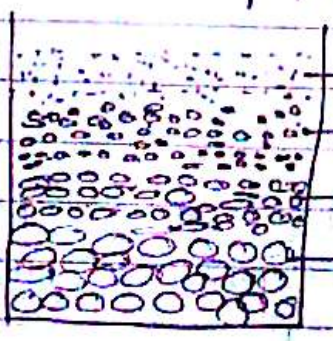

धरती की वह ऊपरी परत जिसमें जीवांश एवं अन्य पदार्थ पाये जाते हैं, मिट्टी कहलाती है।

KD Job Updates

→ जीवांशों के कारण मिट्टी उपजाऊ बनती है। जब चट्टानें के अपरदित टुकड़े लम्बे समय तक वर्षा और वनस्पति के सम्पर्क में बने रहते हैं। तो यह मिट्टी बन जाती है। इस तरह मिट्टी के निर्माण में जलवायु की बड़ी भूमिका रहती है।

— मिट्टी के प्रकार :—

(अम्लीय (पेडाल्फर) मिट्टी — अधिक वर्षा होने से मिट्टी का चूना घुलकर निचली सतह में चला जाता है। इसलिए इसे अम्लीय मिट्टी कहते हैं।

क्षारीय (पेडोकोल) मिट्टी — जिन स्थानों पर वर्षा कम होती है वहाँ चूना मिट्टी की ऊपरी सतह पर ही बना रहता है, ऐसी मिट्टी क्षारीय होती है।

KD Job Updates

— भारत की मिट्टियाँ :—

1. जलोढ मिट्टी :—

पूरा उत्तर का मैदान जलोढों का बना है। सबसे कम उपजाऊ जलोढ भाभर है। उ० प्र० के बुन्देलखण्डी क्षेत्रों में कंकरीली - पथरीली भाभर मिट्टी पाई जाती है। सबसे उपजाऊ जलोढ डेल्टा है। बांगर ऐसी जलोढ मिट्टी है, जहाँ बाढ़ का पानी प्रतिवर्ष नहीं पहुँचता। अत यहाँ नई मिट्टी का निर्माण नहीं हो पाता। जबकि खादर में बाढ़ का पानी प्रतिवर्ष पहुँचता है। जिससे नई मिट्टी का निर्माण होता है।

→ अत: बांगर की अपेक्षा खादर अधिक उपजाऊ होता है।

2. काली मिट्टी :—

मालवा और दक्कन का पठार काली मिट्टी से आच्छादित है। यह सही है कि काली मिट्टी में बहुत अधिक ह्यूमस पाया है। लेकिन

इसका काला रंग ह्यूमस के कारण नहीं बल्कि लोहा के कारण है।

→ काली मिट्टी को रेगुर मिट्टी भी कहा जाता है। यह कपास की फसल के लिए बहुत उपयुक्त होती है।

→ यदि काली मिट्टी पर पानी पड़ता है, तो यह चिकनी हो जाती है। सूखे की स्थिति में इसमें दरारें पड़ जाती है।

3. पर्वतीय मिट्टी :—

यह शिवालिक की ढलानों पर पाई जाती है। यहाँ वर्षा अधिक तथा ताप कम होता है। अतः मिट्टी में ह्यूमस तो प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। लेकिन यह अर्द्धगलित होता है। क्योंकि ताप कम होने के कारण कीटाणु सक्रिय नहीं हो पाते हैं। अर्द्धगलित ह्यूमस होने के कारण मिट्टी भूरी होती है। यह मिट्टी बहुत अधिक उपजाऊ नहीं होती है। क्योंकि ढलानों पर अपरदन होने के कारण मिट्टी का स्तरीकरण नहीं हो पाता है। भारत की यही एकमात्र मिट्टी है, जिसमें नाइट्रोजन अधिक मात्रा में पाया जाता है। शेष में नाइट्रोजन की कमी होती है।

4. लाल मिट्टी :—

यह मिट्टी कम वर्षा एवं अधिक ताप वाले स्थानों पर पायी जाती है। अधिक ताप के कारण कीटाणु बहुत अधिक सक्रिय होते हैं। इसलिए ह्यूमस को खा जाते हैं। अतः ह्यूमस्किक एसिड नहीं बनता है। यही कारण है कि मिट्टी के सतह पर पाये जाने वाला लोहा घुलकर मिट्टी की सतह के नीचे नहीं जाता है। यह ऊपर ही रहता है इसलिए मिट्टी लाल होती है।

KD Job Updates

→ लाल मिट्टी भारत के वृष्टि छाया प्रदेशों में पाई जाती है। यह मिट्टी आन्ध्र प्रदेश, तमिलनाडु, मध्य प्रदेश में पाई जाती है। कम वर्षा वाले क्षेत्रों में पाये जाने के कारण मिट्टी क्षारीय होती है। जो ह्यूमस विहीन होती है। अत: अनउपजाऊ होती है।

5. लैटेराइट मिट्टी :—
यह मिट्टी अधिक वर्षा व अधिक ताप वाले क्षेत्रों में पाई जाती है। यह मुख्य रूप से पूर्वोत्तर और सह्याद्रि की पहाड़ियों पर पाई जाती है। यह मिट्टी चाय एवं कहवा के लिए बहुत उपयुक्त होती है।

6. मरुस्थलीय मिट्टी :—
यह मिट्टी, राजस्थान, विदर्भ सौराष्ट्र में पाई जाती है। यह 60 सेमी० से कम वर्षा वाले स्थानों पर पाई जाती है। इस स्थानों मिट्टी में फास्फोरस प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। इस मिट्टी में मरुद्भिद वनस्पतियाँ पाई जाती है। जैसे — बबूल, नागफनी इत्यादि।

— मृदा अपरदन :—

↓ अवनलिका अपरदन
↓ परतदार अपरदन

अवनलिका अपरदन :—
पानी का तेज बहाव मिट्टी में पतली - पतली नालियाँ बना देता है। नालियाँ बनने के कारण मिट्टी का अपरदन होता है। इस तरह का अपरदन मालवा के पठार एवं शिवालिक श्रेणियों पर होता है।

KD Job Updates

परतदार अपरदन :—
तेज हवा मिट्टी की ऊपरी परत उड़ा ले जाती है। इसी को परतदार अपरदन कहते हैं। ऐसा रेगिस्तानी क्षेत्रों में होता है।

मृदा अपरदन को रोकने के उपाय :—
1. वृक्षारोपण करके
2. पशु चरागाहों पर प्रतिबन्ध लगाकर।
3. मेड़बन्दी करके
4. पहाड़ी पर ढालानों पर समोच्च जुताई करके।

नोट:- भारत में सर्वाधिक अपरदन चम्बल घाटी में होता है।

वन :—

→ भारत के कुल भू-भाग के 21.05% भाग पर वन हैं। इन वनों में —
→ सघन वन (2.5%)
→ मध्यम सघन वन (9.76%)
→ खुले वन (9.75%)

→ वन क्षेत्र सरकार घोषित करती है। वन क्षेत्र घोषित होने के लिए यह जरुरी नहीं है कि वह क्षेत्र वनाच्छादित ही हो। सरकार ने सबसे बड़ा वन क्षेत्र अंडमान निकोबार द्वीप समूह को जबकि सबसे छोटा वन क्षेत्र हरियाणा को घोषित किया है।

KD Job Updates

सर्वाधिक वन (वन रिपोर्ट-2011)

क्षेत्रवार	प्रतिशतता (80%)
1. मध्य प्रदेश	1. मिजोरम
2. अरुणांचल प्रदेश	2. लक्षद्वीप
3. छत्तीसगढ़	3. अंडमान निकोबार
4. महाराष्ट्र	4. अरुणांचल प्रदेश
5. उड़ीसा	5. नागालैण्ड

Note:-

1. सबसे कम वन हरियाणा में है।
2. 2011 वन रिपोर्ट के अनुसार आन्ध्र प्रदेश में वन घटा है, एवं पंजाब में बढ़ा है।
3. यूपी में केवल 4.6% भू-भाग पर ही वन है।
4. 1988 की वननीति के अन्तर्गत यह कहा गया था कि 33% भू-भाग पर वन होना चाहिए। इस वननीति में 2012 तक इस लक्ष्य को पाने का लक्ष्य था, जो कि अब बढ़ाकर अगले 10 वर्ष में कर दिया गया है।
5. ग्रीन इंडिया मिशन के अन्तर्गत भी 33% भू-भाग पर वनाच्छादन का लक्ष्य है।
6. वन सर्वेक्षण 1987 से शुरु हुआ। वन सर्वेक्षण विभाग देहरादून हर दो वर्ष पर रिपोर्ट जारी करता है।
7. वनों की दृष्टि से भारत 10 वें स्थान पर है। सबसे अधिक वन रूस, आस्ट्रेलिया, ब्राजील एवं कनाडा में है।

:- वनों का वर्गीकरण :-

1. आर्द्र उष्ण कटिबन्धीय चौड़ी पत्ती वाले सदाबहार वन :- विश्व में ऐसे वन डोल्ड्रम पेटी में पाये जाते हैं।

KD Job Updates

जैसे—
ब्राजील, कांगो, इण्डोनेशिया, मलेशिया इत्यादि।
भारत में ऐसे वन पश्चिमी घाट की पहाड़ियों में पाये जाते हैं। जो मसालों के लिए प्रसिद्ध हैं। ये वन जीव विविधता के लिए भी जाने जाते हैं।

2. आर्द्र उष्ण कटिबन्धीय पर्णपाती या मानसूनी वन :—
ये वन 100 - 200 सेमी० वर्षा वाले स्थानों में पाये जाते हैं भारत में ये वन गंगा-यमुना के मैदान व पूर्वोत्तर भारत में पाये जाते हैं। इन वनों में शीशम, चन्दन इत्यादि के वृक्ष मिलते हैं।

3. शुष्क उष्ण कटिबन्धीय पतझड़ वाले वन :—
ये वन वृष्टि छाया वाले प्रदेशों में पाये जाते हैं। ये वन मुख्य रूप से पश्चिमी घाट के पूरब के वृष्टि छाया प्रदेश में पाये जाते हैं।

4. मरुस्थलीय वन :—
ये वन 60 सेमी० से कम वर्षा वाले स्थानों पर पाये जाते हैं। इन वनों में मुख्य रूप से कँटीली झाड़ियाँ पाई जाती हैं।
जैसे— नागफनी।

5. शंकुधारी या अल्पाइन वन :—
ये वन शीतोष्ण कटिबन्धों में पाये जाते हैं। विश्व में टैगा क्षेत्रों में पाये जाने वाले वन इसी तरह के हैं। भारत में ये वन हिमालयी क्षेत्रों में 2000 मी० से ऊँचे पर पाये जाते हैं।

KD Job Updates

ये मुख्य रूप से हिमालय के दक्षिणी ढलानों पर पाये जाते हैं। ये वन इमारती लकड़ियों के लिए जाने जाते हैं। जैसे-

देवदार, चीड़।

ज्वारीय वन :—

ये वन नदी डेल्टाओं में पाये जाते हैं। ये लवणा सहिष्णु होते हैं। अर्थात् इनमें खारापन सहन करने की क्षमता होती है।

→ इन वनों में सुन्दरीय, मैंग्रूब, नारियल इत्यादि पाये जाते हैं। पश्चिम बंगाल के सुन्दरवन में सुन्दरीय नामक वृक्ष पाया जाता है।

→ मैंग्रूब वनस्पतियाँ पर्यावरणीय दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण होती हैं। कछुए जैसे समुद्री जीव इन्हीं वनस्पतियों में अण्डे देते हैं। इन्हीं में उनके शिशु पलते हैं। मानवीय क्रियाकलापों के कारण मैंग्रूब वनस्पतियाँ बड़े पैमाने पर नष्ट हो रही हैं। इसलिए पर्यावरण को बहुत नुकसान पहुँच रहा है। अतः इसके संरक्षण हेतु आर्द्र भूमि क्षेत्र घोषित किया गया है। ये वनस्पतियाँ सबसे अधिक पश्चिम बंगाल एवं दूसरे नं० पर अंडमान निकोबार द्वीप समूह में पाई जाती हैं।

—; वन्य जीव संरक्षण :—

→ वन्य जीव संरक्षण के लिए सरकार कई स्तरों पर प्रयास कर रही है।

जैसे —

1. प्रशासनिक आकार पर वनों का वर्गीकरण
2. संकट के कगार पर खड़े वनस्पतियों के लिए डाटा बुक तैयार करना।
3. राष्ट्रीय उद्यानों एवं वन्य जीव अभ्यारण्य की स्थापना।

KD Job Updates

4. जैव मण्डल क्षेत्र घोषित करना।
5. आर्द्र भूमि क्षेत्र घोषित करना।

—: वनों का वर्गीकरण :—

- सुरक्षित वन
- संरक्षित वन
- अवर्गीकृत वन

सुरक्षित वन :— ये सरकारी सम्पत्ति होते हैं। इनमें लकड़ी एवं पशुचारण दोनों वर्जित है।

संरक्षित वन :— ये भी सरकारी सम्पत्ति होते हैं। लाइसेंस इनमें लकड़ी काट सकते हैं। और पशुचारण भी कर सकते हैं।

अवर्गीकृत वन :— इन वनों को सरकार ठेके पर देती है इनमें लकड़ी काटने एवं पशुचारण की मनाही नहीं है।

—: डाटा बुक :—
(Data Book)

- Red Data Book
- White Data Book
- Green Data Book

Red Data Book :— इसमें ऐसी प्रजातियों का उल्लेख होता है, जो विलुप्त होने को हैं।

KD Job Updates

White Data Book :— इसमें दुर्लभ प्रजातियों का उल्लेख हुआ है।

Green Data Book :— इसमें ऐसी प्रजातियों का उल्लेख होता है, जिन्हें बचा लिया गया है।

जीव - जन्तुओं की जो प्रजातियाँ 3 पीढ़ियों तक दिखाई न दें उन्हें विलुप्त प्रजाति माना जाता है।

राष्ट्रीय उद्यान एवं वन्य जीव अभ्यारण्य :—

राष्ट्रीय उद्यान - (1) वन्य जीव अभ्यारण्य - (2)

→ भारत में कुल 102 राष्ट्रीय उद्यान और 515 वन्य जीव अभ्यारण्य हैं। भारत के कुल भू-भाग के 4.5% भाग पर ये फैले हुए हैं। कुछ महत्वपूर्ण राष्ट्रीय उद्यान निम्नलिखित हैं। —

1. उत्तरांचल

1. जिम कार्बेट राष्ट्रीय उद्यान उत्तराखण्ड :—

इसे हैली का राष्ट्रीय उद्यान कहा जाता है। इसकी स्थापना 1936 में हुई थी। यह भारत का प्रथम एवं सबसे पुराना राष्ट्रीय उद्यान है। यह नैनीताल एवं पौड़ी गढ़वाल में है। 1973 में शुरू किया गया टाइगर प्रोजेक्ट यहीं से शुरू हुआ।

2. राजाजी राष्ट्रीय पार्क :—

यह भी उत्तराखण्ड में ही है, जो हाथियों के लिए प्रसिद्ध है।

3. फूलों की घाटी राष्ट्रीय उद्यान :—

यह उत्तरांचल के चमोली जिले में स्थित है। यह जैव विविधता

KD Job Updates

के लिए जानी जाती है।

→ उपरोक्त तीनों राष्ट्रीय उद्यानों के अलावा उत्तरांचल में → गंगोत्री
→ गोविन्द
→ नन्दा देवी नामक 3 राष्ट्रीय उद्यान और हैं।

2. अण्डमान निकोबार (9)

→ सैण्डल पीक① रानी झाँसी① महात्मा गाँधी① माउण्ट हैरियट① कैम्बल इत्यादि।

3. मध्य प्रदेश (9)

→ कान्हा², पन्ना①, पेंच①, माधव①, फासिल①, बान्धवगढ़¹।

4. आन्ध्र प्रदेश (6)

→ राजीव गाँधी, महावीर हरिना वनस्थली①।

5. महाराष्ट्र (6)

→ संजय गाँधी①, चन्दौली, नवेगाँव①।

6. पश्चिम बंगाल (5)

→ सुन्दरवन①, नोरावैली①, पुरुलिया।

7. राजस्थान (5)

→ मरुभूमि①, केवलादेव①, रणथम्भौर², सरिस्का²।

→ केवलादेव को घाना पक्षी विहार भी कहा जाता है। यह प्रवासी साइबेरियन सारसों के लिए प्रसिद्ध है
→ मरुभूमि राष्ट्रीय उद्यान सोहन पक्षी के लिए विख्यात है।
→ रणथम्भौर को राजीव गाँधी वन्य जीव अभयारण्य भी कहा जाता है। जो बाघों के लिए प्रसिद्ध है।

KD Job Updates

8. केरल (6)

→ पेरियार[2], साइलेन्ट वैली[2] (Silent Vally)

Note: दोनों राष्ट्रीय उद्यान जैव विविधता के लिए जाने जाते हैं।

9. कर्नाटक

→ बांदीपुर[1], कुद्रेमुख[1], बानेरघट्टा[1]।

Note: बांदीपुर हाथियों के लिए प्रसिद्ध है।

10. जम्मू कश्मीर

→ दचिग्राम[1], सिटी फारेस्ट[1] (सलीम अली)

11. असम

→ काजीरंगा[1], मानस[1]

Note: काजीरंगा गैंडों के लिए एवं मानस हाथियों एवं संकटापन्न जीवों के लिए प्रसिद्ध है।

12. अरुणांचल प्रदेश

→ नामदफा

Note: यह बंगाल टाइगर के लिए प्रसिद्ध है।

13. बिहार (1)

→ बाल्मीकि[1]

14. झारखण्ड (1)

→ बेतला[1]

15. छत्तीसगढ़

→ इन्द्रावती[2], कांगेरघाटी[1], गुरुघासीदास[2]

— : प्रमुख परियोजनाएँ : —

1. हंगुल परियोजना (1970)
2. शेर परियोजना (1972)
3. बाघ परियोजना (1973)
4. घड़ियाल परियोजना (1974)
5. हाथी परियोजना (1991) (1 Dec 1992)

राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधिकरण :—

बाघ या टाइगर परियोजना 1973 में कार्बेट नेशनल पार्क से शुरु की गई। इस समय कुल 42 बाघ अभ्यारण्य हैं।

→ 42 वाँ बाघ अभ्यारण्य कँवल है। इसका विस्तार आन्ध्र प्रदेश और महाराष्ट्र में है।

इन बाघ अभ्यारण्यों में से —

1. क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे बड़ा बाघ रिजर्व नागार्जुन सागर (आन्ध्र प्रदेश) है।

2. सबसे छोटा महाराष्ट्र का पेंच है।

3. सबसे ऊँचाई पर स्थित बाघ रिजर्व अरूणांचल प्रदेश का नामदफा

4. सबसे दक्षिणतम बाघ रिजर्व कालकड मुथथुरेई है। यह तमिलनाडु स्थित है।

5. अन्नामलाई टाइगर रिजर्व को इन्दिरा गाँधी टाइगर रिजर्व भी कहा जाता है। Oct 1961 में इन्दिरा गाँधी ने इसका दौरा किया था इसलिए उन्हीं के नाम पर इसका नाम रख दिया गया।

KD Job Updates

6. विश्व का सबसे बड़ा टाइगर रिजर्व म्यांमार के हुकांग घाटी में बनाया जा रहा है।

7. बाँदीपुर को सबसे व्यवस्थित बाघ रिजर्व कहा जाता है।

8. वर्तमान में भारत में कुल 1700 बाघ हैं।

प्रमुख बाघ रिजर्व :—

1. काजीरंगा + मानस, नमेरी - (असम)
2. नामदफा, पाक्वी — (अरूणाचल)
3. इन्द्रावती, अचानकमार, उदन्ती — (छत्तीसगढ़)
4. डम्पा — (मिजोरम)
5. बाँदीपुर, नागेरहोल, भद्रा, बिलीगिरी कुद्रेमुख — (कर्नाटक)

: विश्व धरोहरों के रूप में घोषित अभ्यारण्य :—

1. काजीरंगा
2. मानस
3. नन्दा देवी
4. केवलादेव
5. बान्धवगढ़ (सुन्दरवन)

—: जैव मण्डल क्षेत्र :—
(Biosphere Reserve)

→ जैव विविधता के संरक्षण के लिए जैव मण्डल क्षेत्र घोषित किये जाते हैं। इनका उद्देश्य पारिस्थितिकी प्रणाली में आनुवंशिक विविधता को बनाये रखना है।

KD Job Updates

→ जैव मण्डल निर्धारण क्षेत्र के अन्तर्गत 3 मण्डलों का निर्धारण किया जाता है।

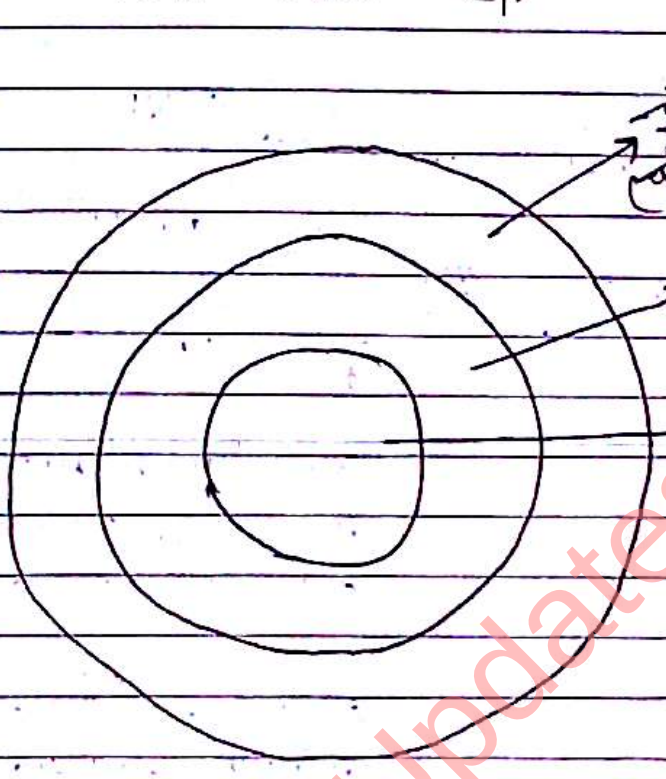

→ वर्तमान में कुल 18 Biosphere Reserve हैं। इनमें पहला Biosphere Reserve नीलगिरि है। सबसे नया पन्ना है। इन 18 में से 8 को यूनेस्को ने विश्व के Biosphere Reserve जैवमण्डलीय आरक्षित क्षेत्रों में शामिल किया है जो निम्नलिखित हैं।—

1. सुन्दरवन (2) मन्नार की खाड़ी (त
3. शिमलीपाल 4. नीलगिरी 5. नन्दा देवी,
6. पंचमढ़ी 7. नोंकरेक (मेघालय)
8. अचानकमार (मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ 2012 में घोषित)

Trick: सुन्दर मन वाली नीली साँवली नन्दा को पंचों ने यूनेस्को जाने से अचानक रोक दिया।

आर्द्र भूमि क्षेत्र :—
रामसर सन्धि भी कहलाता है।

KD Job Updates

→ 2 फरवरी 1971 में ईरान के रामसर में आर्द्र भूमियों के संरक्षण में एक समझौता हुआ था। इसी को रामसर सन्धि कहा जाता है। इसी उपलक्ष्य में 2 फरवरी को विश्व आर्द्र भूमि दिवस मनाया जाता है।

→ रामसर सन्धि के अनुसार दलदली लवण युक्त जल के साथ 6 मीटर तक की लहरों वाला समुद्री क्षेत्र आर्द्र भूमि क्षेत्र या Wet Land Zone कहलाएगा भारत में आर्द्र भूमियों के संरक्षण के लिए कई क्षेत्र आर्द्र भूमि क्षेत्र घोषित किये गये हैं। जैसे —

भितरकनिका (उड़ीसा), रत्नागिरी (महाराष्ट्र), क्लेमरप्वाइन्ट या पिचवरम (तमिलनाडु), बेम्बानाद (केरल) इत्यादि

— वन नीति (1988) —

इस नीति के महत्वपूर्ण बिन्दु इस प्रकार हैं —

1. पारिस्थितिकी संतुलन को बनाये रखना
2. प्राकृतिक सम्पदा का संरक्षण
3. लकड़ी का विकल्प खोजना
4. 33% भू-भाग पर वन होना
5. वन की सुरक्षा के लिए महिलाओं का सहयोग।

— सामाजिक वानिकी की अवधारणा —

→ यह अवधारणा वेस्टोवी ने दी। सामाजिक वानिकी कार्यक्रम विश्व बैंक की सहायता से चलाया जा रहा है। इसके अन्तर्गत —

1. रेललाइनों, सड़कों के किनारे अन्य खाली स्थानों पर वृक्षारोपण किया जाता है।

KD Job Updates

सरकार स्वयं वृक्षारोपण करके वृक्षों पर मालिकाना हक जनता को दे देती है।

2. इससे गरीबों को लकड़ी एवं उनके पशुओं को चारा उपलब्ध हो जाता है।

3. इस कार्यक्रम का लक्ष्य 33% भाग पर वनीकरण करना है।

→ कुल मिलाकर सामाजिक वानिकी का सार यही है कि "वानिकी की लोगों की लोगों के लिए लोगों द्वारा है।"

— वन से सम्बन्धित कुछ संस्थाएँ :—

1. भारतीय वन्य जीव संस्थान — देहरादून
2. भारतीय वन संरक्षण विभाग — देहरादून
3. राष्ट्रीय प्राणि उद्यान — दिल्ली
4. सबसे बड़ा चिड़ियाघर — कोलकाता
5. पक्षी विज्ञान के पिता — सलीम अली

— अपवाह्य तन्त्र :—
(Drainage System)

→ नदी धाराओं के संयुक्त रूप को अपवाह्य तन्त्र कहा जाता है। यह अपवाह्य तन्त्र वृक्षाकार, तलयाकार, अपकेन्द्री इत्यादि रूपों में हो सकता है।

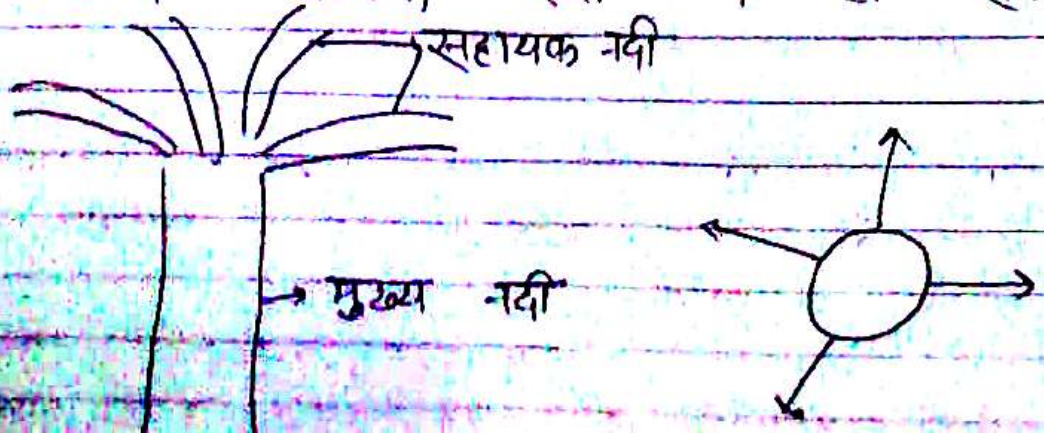

KD Job Updates

Mission upsc ग्रूप

अपवाह्य तन्त्र

- सिन्धु अपवाह्य
- गंगा अपवाह्य
- प्रायद्वीपीय अपवाह्य

हिमालयी अपवाह्य

हिमालयी अपवाह्य एवं प्रायद्वीपीय अपवाह्य में अन्तर:-

1. ग्लेशियर से निकलने के कारण हिमालयी नदियाँ सदानीरा होती हैं। जबकि वर्षा के पानी पर निर्भर रहने के कारण प्रायद्वीपीय नदियाँ गर्मियों में सूख जाती हैं।
2. हिमालयी नदियाँ प्राय: डेल्टा बनाती हैं जबकि प्रायद्वीपीय नदियाँ एश्चुअरी भी बनाती हैं। यदि प्रायद्वीपी नदियाँ डेल्टा बनाती भी हैं तो वे बड़े छोटे होते हैं।
3. हिमालयी नदियाँ विसर्प का निर्माण करती हैं जबकि प्रायद्वीपीय नदियाँ सीधे बहती हैं।
4. हिमालयी नदियों का प्रवाह क्षेत्र बड़ा जबकि प्रायद्वीपीय नदियों का छोटा होता है।

प्रायद्वीपीय नदियाँ 12/07/013 27/07

नदी	निकलती है	अपवाह तंत्र	गिरती है
नर्मदा द्रोणी	म०प्र० के अमरकंटक के निकट से	मध्य प्रदेश, गुजरात	अरब सागर
तापी द्रोणी	म०प्र० के बेतुल जिले में सतपुड़ा से	मध्य प्रदेश, गुजरात महाराष्ट्र	अरब सागर
गोदावरी द्रोणी	महाराष्ट्र के नासिक में पश्चिमी घाट से	महाराष्ट्र, म०प्र०, उड़ीसा, आ०प्र०	बंगाल की खाड़ी
महानदी द्रोणी	छत्तीसगढ़ की उच्चभूमि	उड़ीसा	बंगाल की खाड़ी
कृष्णा द्रोणी	महाराष्ट्र के पश्चिमी घाट में महाबलेश्वर से	महाराष्ट्र, कर्नाटक, आ०प्र०	बंगाल की खाड़ी
कावेरी द्रोणी	पश्चिमी घाट के	तमिलनाडु, केरल	बंगाल की खाड़ी

KD Job Updates

KD Job Updates

"साँझ को चिन्नाराव व्यस्त रहते हैं इस समय यम भी गये तो गम नहीं प्याप है रपट जाएंगे और ऐसा गटकेंगे कौर बनाकर कि पता ही नहीं चलेगा।"

— नदियों के उद्गम स्थल :—

1. मानसरोवर झील :—
इस झील से सिन्धु, सतलज और ब्रह्मपुत्र नदियाँ निकली हैं।

2. हिमालय के ग्लेशियर :—
यमुनोत्री ग्लेशियर से यमुना और गंगोत्री ग्लेशियर से गंगा नदी निकली है, इसी तरह गंगा की अन्य सहायक नदियाँ भी (सोन को छोड़कर) हिमालय के ग्लेशियर से ही निकली हैं।

3. विन्ध्याचल की पहाड़ियाँ :—
यहाँ से चम्बल, बेतवा केन जैसी यमुना की सहायक नदियाँ निकली हैं।

4. मैकाल का पठार (अमरकण्टक) :—
यहाँ से महानदी, सोन और नर्मदा नदी निकली हैं, इस पठार से निकलने वाली ये तीनों नदियाँ अपकेन्द्री अपवाह्य तन्त्र का नमूना पेश करती हैं।

5. सह्याद्रि या पश्चिमी घाट की पहाड़ियाँ :—
गोदावरी, कृष्णा कावेरी जैसी प्रायद्वीपीय नदियाँ पश्चिमी घाट की

KD Job Updates

पहाड़ियों से ही निकली हैं।

— : नदियों के मुहाने : —

→ सिन्धु अपवाह्य तन्त्र की पाँचों सहायक नदियाँ सिन्धु से मिलकर अरब सागर में गिर जाती हैं।

→ गंगा की सभी सहायक नदियाँ गंगा से मिलकर बंगाल की खाड़ी में गिर जाती हैं।
यह स्मरण रहे कि सोन गंगा की सहायक नदी है।

→ महानदी, गोदावरी, कृष्णा, कावेरी इत्यादि नदियाँ भी बंगाल की खाड़ी में गिरती हैं। और डेल्टा बनाती हैं।

→ नर्मदा और ताप्ती अरब सागर में गिरती हैं। ये डेल्टा न बनाकर एस्चुअरी बनाती हैं।

→ जहाँ तक ब्रह्मपुत्र अपवाह्य की बात है तो इसकी सहायक नदियों में तिस्ता, देहांग, धनाश्री इत्यादि नदियाँ शामिल हैं।

→ ब्रह्मपुत्र को तिब्बत में सांगपो कहा जाता है। असम में देहांग कहते हैं। बांग्लादेश में जब यह गंगा से मिल जाती है तो दोनों के इस संगम को मेघना कहा जाता है।

→ गंगा और ब्रह्मपुत्र मिलकर विश्व का सबसे बड़ा और उपजाऊ डेल्टा बनाती हैं।

→ ब्रह्मपुत्र द्वीप में मिट्टी के कई द्वीप हैं, जिनमें सबसे बड़ा माजुली द्वीप है। इस द्वीप को सबसे बड़ा नदी द्वीप भी कहा जाता है। आजकल इस द्वीप में क्षरण हो रहा है।
यह स्मरण रहे कि तिस्ता नदी कभी गंगा की सहायक नदी हुआ करती थी। लेकिन अवतलन के कारण अब यह सिक्किम होते हुए ब्रह्मपुत्र में